The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 4 | April 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

जनपद गोण्डा के विशेष संबंध मे जननांकिकीय लाभांश का सामाजिक–भौगोलिक विश्लेषण

डॉ अखण्ड प्रताप पाल
फील्ड इंवेस्टिगेटर, मोहन लाल सुखड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर राजस्थान
प्रो. विवेक कुमार सिंह
अधिष्ठाता कला संकाय , प्रो राजेन्द्र सिंह (रज्जु भय्या) विश्वविद्यालय नैनी प्रयागराज उत्तर प्रदेश

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.20144374

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 27-04-2026

Published: 10-05-2026

Keywords:
जनसांख्यिकीय लाभांश, सामाजिक–भौगोलिक विश्लेषण, निर्भरता अनुपात, जिला गोंडा, स्थानिक असमानताएं।

ABSTRACT

यह अध्ययन गोंडा जिले (उत्तर प्रदेश) में जनसांख्यिकीय लाभांश की जाँच सामाजिक–भौगोलिक दृष्टिकोण से करता है। जनसंख्या गतिशीलता और क्षेत्रीय विकास के मिलन बिंदु पर स्थित यह शोध इस बात की पड़ताल करता है कि आयु–संरचना में आया बदलावकृजिसकी मुख्य विशेषता कार्यकारी आयु वर्ग की जनसंख्या में हुई भारी वृद्धि है। किस प्रकार ग्रामीण–शहरी वितरण, साक्षरता, रोजगार के प्रतिरूप और बुनियादी ढाँचे जैसे स्थानिक कारकों के साथ परस्पर क्रिया करता है। भारत की जनगणना (2001–2021), राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS–5) और जिला सांख्यिकीय पुस्तिकाओं से प्राप्त द्वितीयक आँकड़ों के आधार पर, यह शोध–पत्र निर्भरता अनुपात, लिंग–संरचना और प्रवासन प्रवाह में आए स्थानिक–कालिक रुझानों का चित्रण करता है। स्थानिक विश्लेषण जिले के भीतर मौजूद असमानताओं को उजागर करता है। यह उन क्षेत्रों को विशेष रूप से रेखांकित करता है जिनमें जनसांख्यिकीय लाभांश का लाभ उठाने की उच्च क्षमता मौजूद है। जबकि इसके विपरीत कुछ ऐसे क्षेत्र भी हैं जो अपर्याप्त कौशल विकास और कमजोर कनेक्टिविटी के कारण इस दौड़ में पीछे रह गए हैं। यह अध्ययन तर्क देता है कि गोंडा में जनसांख्यिकीय लाभांश को साकार करने के लिए एकीकृत नीतिगत हस्तक्षेपोंकृ जैसे कि कौशल उन्नयन, गैर–कृषि आजीविका के अवसरों में वृद्धि और संतुलित स्थानिक नियोजन की आवश्यकता है, ताकि युवा मानव–पूंजी को सतत सामाजिक–आर्थिक विकास में परिवर्तित किया जा सके।

प्रस्तावना जनसांख्यिकीय लाभांश (क्मउवहतंचीपब क्पअपकमदक) की अवधारणा उस संभावित आर्थिक विकास को दर्शाती है, जो तब उत्पन्न होता है जब किसी देश या क्षेत्र में जन्म दर और मृत्यु दर में कमी आती है, जिसके

परिणामस्वरूप कार्यशील आयु वर्ग (15–64 वर्ष) की जनसंख्या का अनुपात बढ़ जाता है। यह स्थिति एक अवसर प्रदान करती है, जिसमें यदि मानव पूंजी में उचित निवेश और प्रभावी नीतिगत हस्तक्षेप किए जाएँ, तो जनसंख्या की उत्पादक क्षमता आर्थिक विकास को गति दे सकती है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह विषय विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि देश वर्तमान में जनसांख्यिकीय संक्रमण के एक निर्णायक चरण से गुजर रहा हैय हालांकि इसके लाभ सभी क्षेत्रों में समान रूप से वितरित नहीं हैं। उप–राष्ट्रीय स्तर पर, विशेषकर कम विकसित जिलों में, जनसांख्यिकीय लाभांश का वास्तविक उपयोग सामाजिक–आर्थिक और भौगोलिक परिस्थितियों पर निर्भर करता है। जनसांख्यिकीय लाभांश या दर्शाता है कि आर्थिक विकास के निमित्त अधिक उत्पादन करने हेतु सक्षम लोगों की उपलब्धता अधिक है। यह आर्थिक लाभांश प्राप्त करने की सर्वोत्तम अवस्था होती है। आर्थिक लाभांश प्राप्त करने के लिए यह जरूरी है कि युवाओं को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य एवं शिक्षा उपलब्ध कराई जाए। सामान्य रूप में कोई देश जनसांख्यिकीय लाभांश की स्थिति में तब होता है, जब जनसंख्या संक्रमण कालीन अवस्था से गुजर रही होती है। ऐसे में ग्रामीण कृ षि क्षेत्र में उच्च प्रजनन दर तथा शहरी औद्योगिक क्षेत्र में निम्न प्रजनन देखने को मिलता है। गोंडा जिला इस संदर्भ में अध्ययन का एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित गोंडा जिला मुख्यतः ग्रामीण आबादी, निम्न शहरीकरण स्तर और कृषि–आधारित अर्थव्यवस्था के लिए जाना जाता है। जिले की जनसंख्या संरचना में युवाओं का अनुपात अपेक्षाकृत अधिक है, जो एक संभावित कार्यबल का संकेत देता है। किन्तु इस जनसांख्यिकीय लाभ के साथ–साथ कई चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं, जैसेकृकम साक्षरता दर, शिक्षा एवं रोजगार में लैंगिक असमानता, सीमित औद्योगिक विकास तथा अपर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाएँ। ये संरचनात्मक बाधाएँ यह प्रश्न उत्पन्न करती हैं कि गोंडा जिले में जनसांख्यिकीय लाभांश को किस हद तक प्रभावी रूप से उपयोग में लाया जा सकता है। यद्यपि युवा जनसंख्या आर्थिक विकास के लिए एक अवसर प्रदान करती है, परन्तु पर्याप्त मानव पूंजी निर्माण, रोजगार के अवसरों और संस्थागत समर्थन के अभाव में यही स्थिति जनसांख्यिकीय बोझ (Demographic Burden) में परिवर्तित हो सकती है। अतः जनसांख्यिकीय प्रवृत्तियों और सामाजिक–भौगोलिक वास्तविकताओं के बीच अंतर्संबंध को समझना अत्यंत आवश्यक है।

उद्देश्य

1– जनपद गोण्डा के जननांकिकीय लाभांश का अध्ययन करना

2– जननांकिकीय लाभांश के उत्तरदाई कारकों का मूल्यांकम करना

3– जननांकिकीय लाभांश के सामाजिक–भौगोलिक स्थिति का विश्लेषण करना

आकड़ा स्रोत एवं विधि तंत्र – प्रस्तुत शोध हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आकड़ों का प्रयोग किया गया है। इसके साथ ही आवश्यकतानुसार चार्ट एवं तालिका का भी कालिक परिवर्तन के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण हेतु प्रयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र जनपद गोण्डा भारत देश के उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित है। इसका देशान्तरीय विस्तार 81°31′ पूर्व से 82°86′ पूर्व है तथा अक्षांशीय विस्तार 26°47′ उत्तर से 27°20′ उत्तर है।जनपद गोण्डा उत्तर प्रदेश के निम्न जनपदों से सीमा बनाता है। इसकी सीमा उत्तर में श्रावस्ती एवं बलरामपुर जनपद से ,पूर्व में बस्ती जनपद से ,दक्षिण में अयोध्या जनपद से ,उत्तर पश्चिम में बहराइच जनपदसे तथा दक्षिण पश्चिम में बाराबंकी जनपदों सेसीमा बनाती है। जनपद गोण्डा का कुल क्षेत्रफल 4003 वर्ग किलोमीटर है। जनपद गोण्डा की मृदा बलुई, दोमट तथा बलुई – दोमट प्रकार की है। जनपद गोण्डा में खरीफ, रबी, जायद तीनो प्रकार की फसलें उगाई जाती है। जनगणना 2011 के अनुसार जनपद गोण्डा की कुल जनसंख्या 3433919 है जिसमे 1787146 पुरुष जनसंख्या तथा 1646773 महिला जनसंख्या है। जनपद गोण्डा में 541247 परिवार निवास करते हैं। जनपद का औसत लिंगानुपात 921 है। 2011 की जनगणना के अनुसार 6.6 प्रतिशत जनसंख्या जनसंख्या शहरी क्षेत्र में निवास करती है तथा 93.4 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है। जनपद गोण्डा का औसत जनघनत्व 858 है। सरयू, विसुही, मनवर, टेढ़ी, कुआनो यहां की प्रमुख नदियां हैं।

जनसांख्यिकीय लाभांश को प्रभावित करने वाले भौगोलिक कारकों का विस्तृत विश्लेषण

1- भौगोलिक स्थिति और क्षेत्रीय स्थान– गोंडा जिला उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित है और अवध क्षेत्र का हिस्सा है। यह जिला भौगोलिक रूप से महत्वपूर्ण स्थान पर होने के बावजूद आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है। यद्यपि गोंडा जिला राज्य की राजधानी लखनऊ के अपेक्षाकृत निकट है, फिर भी यह औद्योगिक और शहरी विकास के लाभों से पूर्णतः जुड़ नहीं पाया है। इसका कारण कमजोर परिवहन नेटवर्क, सीमित औद्योगिक निवेश और क्षेत्रीय असमानताएँ हैं। जिसका प्रभाव बाजारों तक सीमित पहुँच, औद्योगिक विकास की कमी एवं रोजगार के अवसरों में कमी पर पद रहा है। इस प्रकार, भौगोलिक स्थिति जनसांख्यिकीय लाभांश को सीमित करती है।

2- भौतिक भूगोल और स्थलाकृति (Topography)– गोंडा जिला गंगा के मैदानों में स्थित है, जहाँ भूमि समतल और उपजाऊ है। यहाँ की मिट्टी जलोढ़ (।ससनअपंस) है, जो कृषि के लिए अत्यंत उपयुक्त है। हालांकि यह भौगोलिक विशेषता कृषि को बढ़ावा देती है, लेकिन इससे अर्थव्यवस्था का एकांगी विकास (डवदवबमदजतपब क्मअमसवचउमदज) होता है। औद्योगिक गतिविधियों के लिए आवश्यक खनिज संसाधनों का अभाव है। जिसका प्रभाव कृषि पर अत्यधिक निर्भरता, औद्योगिक विविधीकरण की कमी एवं छिपी हुई बेरोजगारी पर पद रहा है। इस प्रकार, स्थलाकृति आर्थिक संरचना को सीमित करती है।

3 - जलवायु और कृषि पर निर्भरता– गोंडा जिले की जलवायु उपोष्णकटिबंधीय ;ैनइजतवचपबंस) है। यहाँ गर्मी, वर्षा और सर्दी तीन प्रमुख ऋतुएँ होती हैं। कृषि मुख्यतः मानसून पर निर्भर है। असमय वर्षा, सूखा या बाढ़ जैसी समस्याएँ कृषि उत्पादन को प्रभावित करती हैं। इससे किसानों की आय अस्थिर रहती है। जिसका प्रभाव मौसमी रोजगार, आय में अस्थिरता एवं आर्थिक असुरक्षा पर पड़ रहा है। इस प्रकार, जलवायु अनिश्चितता जनसांख्यिकीय लाभांश को प्रभावित करती है।

4 - भूमि उपयोग और मृदा (Soil) की स्थिति– गोंडा जिले में उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी पाई जाती है, जो गेहूँ, धान और गन्ने की खेती के लिए उपयुक्त है। हालांकि, जनसंख्या वृद्धि के कारण भूमि जोत छोटे और बिखरे हुए हो गए हैं। इससे कृषि की उत्पादकता सीमित हो जाती है। इसका प्रभाव प्रति व्यक्ति आय कम, निवेश की क्षमता कम, मानव पूंजी विकास में बाधा पर पड़ रहा है। भूमि उपयोग के पैटर्न आर्थिक विकास को प्रभावित करते हैं।

5 - जल संसाधन और बाढ़ की समस्या–गोंडा जिला सरयू नदी सहित कई नदियों से प्रभावित है। जल संसाधन कृषि के लिए लाभकारी हैं, लेकिन बाढ़ एक गंभीर समस्या है। बाढ़ के कारण फसलें नष्ट हो जाती हैं, घर और सड़कें क्षतिग्रस्त होती हैं, लोगों का विस्थापन होता है। इसका प्रभाव आर्थिक नुकसान,गरीबी में वृद्धि, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में बाधा के रूप मे प्रैलक्षित होता है। इस प्रकार, प्राकृतिक आपदाएँ जनसांख्यिकीय लाभांश को कमजोर करती हैं।

6 - परिवहन और संपर्क (Connectivity)– गोंडा जिले में परिवहन और संपर्क व्यवस्था अपेक्षाकृत कमजोर है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में।प्रमुख समस्याओं में खराब सड़क नेटवर्क, सीमित रेलवे कनेक्टिविटी एवं बाजारों तक पहुँच की कमी है। जिसका प्रभाव श्रमिकों की गतिशीलता में कमी, उद्योगों का विकास बाधित एवं रोजगार के अवसर सीमित के रूप मे दिखाई देता है। इस प्रकार, कमजोर संपर्क व्यवस्था आर्थिक विकास को प्रभावित करती है।

8- शहरीकरण और बसावट पैटर्न– गोंडा जिले में शहरीकरण का स्तर बहुत कम है। केवल लगभग 6.5% जनसंख्या शहरी क्षेत्रों में रहती है।ग्रामीण बसावट बिखरी हुई है, जिससे संसाधनों का वितरण कठिन हो जाता है। इसका प्रभाव सेवा क्षेत्र का विकास सीमित, नवाचार और निवेश की कमी एवं रोजगार के अवसर कम के रूप मे दिखता है। इस प्रकार, कम शहरीकरण जनसांख्यिकीय लाभांश को सीमित करता है।

जनसांख्यिकीय लाभांश को प्रभावित करने वाले प्रमुख समाजशास्त्रीय कारक

1-शिक्षा और मानव पूंजी निर्माण–शिक्षा किसी भी समाज के विकास का आधार होती है और यह मानव पूंजी निर्माण का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। गोंडा जिले में शिक्षा का स्तर अपेक्षाकृत कम है, विशेषकर महिलाओं और कमजोर वर्गों में। इसकी मुख्य समस्याएँ उच्च ड्रॉपआउट दर , ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की निम्न गुणवत्ता , तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा की कमी एवं जागरूकता का अभाव है। शिक्षा केवल ज्ञान प्रदान नहीं करती, बल्कि यह सामाजिक चेतना, सोच और व्यवहार को भी प्रभावित करती है। गोंडा जिले में शिक्षा की कमी के कारण लोग पारंपरिक सोच से बाहर नहीं निकल पाते। इसका प्रभाव कम कौशल वाला कार्यबल, रोजगार के सीमित अवसर एवं सामाजिक गतिशीलता में कमी पर पड़ रहा है। इस प्रकार, शिक्षा की कमी जनसांख्यिकीय लाभांश को कमजोर करती है।

2 - लैंगिक असमानता और महिलाओं की स्थिति–गोंडा जिले में लैंगिक असमानता एक प्रमुख समाजशास्त्रीय समस्या है। इसके मुख्य पहलू महिलाओं की कम साक्षरता, कार्यबल में महिलाओं की कम भागीदारी , सामाजिक प्रतिबंध और पितृसत्तात्मक व्यवस्था एवं बाल विवाह हैं । पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं को घरेलू भूमिकाओं तक सीमित रखा जाता है। इससे उनकी शिक्षा और रोजगार के अवसर सीमित हो जाते हैं। जिसका प्रभाव आर्थिक विकास में कमी, परिवार की आय मे कमी एवं सामाजिक असमानता पर पड़ता है। जब आधी जनसंख्या आर्थिक गतिविधियों में भाग नहीं लेती, तो जनसांख्यिकीय लाभांश का पूरा लाभ नहीं मिल पाता।

3- सामाजिक स्तरीकरण (जाति और वर्ग)–भारतीय समाज में जाति और वर्ग आधारित विभाजन एक महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय तत्व है।गोंडा जिले में अनुसूचित जाति और अन्य पिछड़े वर्गों की बड़ी आबादी है, जिन्हें कई सामाजिक और आर्थिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। इसकी मुख्य समस्याओं में शिक्षा में असमानता , रोजगार के सीमित अवसर , सामाजिक भेदभाव एवं संसाधनों तक सीमित पहुँच है। जाति व्यवस्था सामाजिक असमानता को स्थायी बनाती है और सामाजिक गतिशीलता को सीमित करती है। जिसके कारण प्रतिभा का पूर्ण उपयोग नहीं हो पाता एवं गरीबी और पिछड़ापन बना रहता है । इस प्रकार, सामाजिक स्तरीकरण जनसांख्यिकीय लाभांश को सीमित करता है।

4- परिवार संरचना और जनसंख्या व्यवहार–परिवार समाज की मूल इकाई है और यह जनसंख्या के व्यवहार को प्रभावित करता है। गोंडा जिले में पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रणाली प्रचलित है। जिसके कारण प्रारंभिक विवाह , अधिक बच्चे एवं पुत्र की प्राथमिकता को ध्यान मे रखा जाता है।इन प्रथाओं के कारण आश्रित जनसंख्या बढ़ती है और संसाधनों पर दबाव पड़ता है। जिसका प्रभाव शिक्षा और स्वास्थ्य पर कम निवेश एवं आर्थिक विकास में बाधा पर पड़ रहा है।

5 - सांस्कृतिक मान्यताएँ और परंपराए– गोंडा जिले में पारंपरिक सांस्कृतिक मान्यताएँ अभी भी प्रभावशाली हैं। उदाहरण के रूप में महिलाओं के काम करने पर प्रतिबंध , परंपरागत व्यवसायों को प्राथमिकता एवं आधुनिक शिक्षा के प्रति उदासीनता है। इसका प्रभाव नवाचार और परिवर्तन में बाधा एवं आर्थिक अवसरों का सीमित उपयोग पर पड़ रहा है।

6 - स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण– स्वास्थ्य केवल शारीरिक नहीं, बल्कि सामाजिक स्थिति का भी दर्पण है। जनपद मे कुपोषण , महिलाओं में एनीमिया एवं स्वास्थ्य सेवाओं की कमी के रूप मे परिलक्षित होता है।स्वास्थ्य समस्याएँ अक्सर गरीबी और सामाजिक असमानता से जुड़ी होती हैं। इसका प्रभाव श्रम उत्पादकता में कमी एवं आर्थिक बोझ में वृद्धि पर पड़ रहा है।

7 - प्रवासन और सामाजिक नेटवर्क– गोंडा जिले से बड़ी संख्या में लोग रोजगार के लिए शहरों की ओर जाते हैं।इसके कारण रोजगार की कमी एवं बेहतर अवसरों की तलाश मे कमी बनी रहति है। इसका प्रभाव स्थानीय श्रम शक्ति में कमी एवं सामाजिक संरचना में परिवर्तन पर दिखाई पड़ता है।

8- सामाजिक संस्थाएँ और शासन–शिक्षा, स्वास्थ्य और प्रशासनिक संस्थाएँ समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।इससे योजनाओं का कमजोर क्रियान्वयन एवं जागरूकता की कमी की समस्याएँ उत्पन्न होती है। जिसका प्रभाव विकास योजनाओं का सीमित लाभ के रूप मे दिखाई देता है।

9- गरीबी और सामाजिक बहिष्करण–गरीबी एक प्रमुख समाजशास्त्रीय समस्या है। जिसका प्रभाव शिक्षा और स्वास्थ्य तक सीमित पहुँच एवं आर्थिक अवसरों की कमी के रूप मे दिखता है। गरीबी और सामाजिक बहिष्करण जनसांख्यिकीय लाभांश को कमजोर करते हैं।

सारिणी संख्या 1.1 (अ)

जनपद– गोण्डा

विकासखण्डवार व्यावसायिक संरचना

विकासखण्डवार	कुल कर्मकार		परिवर्तन	कुल मुख्य कर्मकार		परिवर्तन
	2007–08	2017–18		2007–08	2017–18	
रूपईडीह	34.02	34.47	29.94	75.15	64.31	11.20
इटियाथोक	33.45	32.87	22.57	76.28	69.69	12.00
पंडरीकृपाल	31.54	37.25	47.88	77.37	60.22	15.10
झंझरी	28.69	32.49	30.82	76.42	59.13	1.23
मुजेहना	34.47	34.20	25.15	77.65	65.96	6.32
कटरा बाजार	34.86	38.72	47.71	83.72	62.92	11.02
हलधरमउ	35.45	36.86	34.33	71.99	55.67	3.89
करनैलगंज	33.95	36.65	36.66	73.42	69.55	29.47
परसपुर	34.31	30.88	12.39	76.22	56.92	–16.07
बेलसर	32.28	32.96	28.17	75.50	68.65	16.55
तरबगंज	29.28	29.91	27.30	81.56	64.93	1.35
वजीरगंज	32.07	34.02	31.34	75.41	62.80	9.39
नवाबगंज	34.26	33.58	21.37	68.41	60.31	7.01
मनकापुर	39.61	38.16	17.15	65.31	61.66	10.60
बभनजोत	47.26	34.55	–7.56	59.63	58.51	–9.28
छपिया	36.77	34.40	13.51	69.97	55.93	–9.26
योग ग्रामीण	34.63	34.41	24.08	73.29	62.28	5.45
योग नगरीय	24.72	28.54	32.90	91.95	77.49	12.01
योग जनपद	33.93	34.03	24.53	74.25	63.12	5.87

स्रोत– जिला सांख्यिकीय पत्रिका जनपद गोण्डा, वर्ष– 2007–08 एवं 2017–18 एवं डिस्ट्रक्ट सेंसस हैंडबुक जनपद गोण्डा वर्ष – 2001 एवं 2011

सारणी संख्या 1.1 (अ) के अनुसार वर्ष 2001 की जनगणना से वर्ष 2011 की जनगणना में जनपदजनपद गोण्डा में कुल कर्मकारों की संख्या में 24.53 प्रतिशत का परिवर्तन दर्ज किया गया। जनपदजनपद के कुल ग्रामीण क्षेत्र में 24.08 प्रतिशत का परिवर्तन तथा नगरीय क्षेत्र में 32.90 प्रतिशत कुल कर्मकार जनसंख्या में परिवर्तन दर्ज किया गया। बभनजोत विकासखण्डविकासखण्ड को छोड़कर जनपदजनपद के अन्य विकासखण्डविकासखण्ड में सकारात्मक कालिक परिवर्तन दर्ज किया गया है। जनपदजनपद में विकासखण्डविकासखण्डवार रूप में सर्वाधिक कुल कर्मकार में कालिक परिवर्तन सर्वाधिक पंडरीकृपाल विकासखण्डविकासखण्ड (47.88 प्रतिशत) में तथा सबसे कम परसपुर

विकासखण्डविकासखण्ड में (12.39 प्रतिशत) दर्ज की गई है। जनपदजनपद के अन्य विकासखण्डविकासखण्ड में कुल कर्मकार जनसंख्या का कालिक परिवर्तन रूपईडीह में 29.94 प्रतिशत, इटियाथोक में 22.57 प्रतिशत, झंझरी में 30.82 प्रतिशत मुजेहना में 25.15 प्रतिशत, कटरा बाजार में 47.71 प्रतिशत हलधरमऊ में 34.33 प्रतिशत, करनैलगंज में 36. 66 प्रतिशत, बेलसर में 28.17 प्रतिशत, तरबगंज में 27.30 प्रतिशत, वजीरगंज में 31.34 प्रतिशत, नवाबगंज में 21.37 प्रतिशत तथा मनकापुर में 17.15 प्रतिशत दर्ज किया गया। बभनजोत विकासखण्डविकासखण्ड में 7.56 प्रतिशत कुल कर्मकार जनसंख्या में गिरावट दर्ज की गई। इस प्रकार स्पष्ट है कि वर्ष 207—08 से वर्ष 2017—18 में कुल कर्मकार जनसंख्या में वृद्धि हुई है।

सारणी संख्या 1.1 (अ) के अनुसार वर्ष 2001 की जनगणना से वर्ष 2011 की जनगणना में जनपद गोण्डा में कुल मुख्य कर्मकार की जनसंख्या में 5.87 प्रतिशत का परिवर्तन दर्ज किया गया। जनपद के कुल ग्रामीण क्षेत्र में 5.45 प्रतिशत का परिवर्तन तथा नगरीय क्षेत्र में 12.01 प्रतिशत का कुल मुख्य कर्मकार जनसंख्या में कालिक परिवर्तन दर्ज किया गया। जनपद में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों तरह का कुल मुख्य कर्मकार जनसंख्या में कालिक परिवर्तन दर्ज किया गया। सर्वाधिक सकारात्मक कालिक परिवर्तन करनैलगंज विकासखण्ड में (29.47) प्रतिशत) तथा सबसे कम सकरात्मक कालिक परिवर्तन झंझरी विकासखण्ड (1.23 प्रतिशत) में दर्ज किया गया। अन्य विकासखण्ड में धनात्मक कालिक परिवर्तन रूपईडीह में 11.20 प्रतिशत, इटियाथोक में 12.00 प्रतिशत, पंडरीकृपाल में 15.10 प्रतिशत, मुजेहना में 6.32 प्रतिशत, कटरा बाजार में 11.02 प्रतिशत, हलधरमऊ 3.89 प्रतिशत, बेलसर में 16.55 प्रतिशत, तरबगंज में 1.35 प्रतिशत, वजीरगंज में 9.39 प्रतिशत, नवाबगंज में 7.01 प्रतिशत, मनकापुर में 10.60 प्रतिशत है। जनपदजनपद में सर्वाधिक ऋणात्मक कालिक परिवर्तन परसपुर विकासखण्ड में —16.07 प्रतिशत तथा सबसे कम ऋणात्मक कालिक परिवर्तन छपिया विकासखण्डविकासखण्ड में (—9.26 प्रतिशत) दर्ज किया गया। अन्य विकासखण्डविकासखण्ड में ऋणात्मक कालिक परिवर्तन बभनजोत विकासखण्उविकासखण्ड में 9.28 प्रतिशत दर्ज किया गया। इस प्रकार स्पष्ट है कि जनपदजनपद के अधिकांश विकासखण्डविकासखण्ड में कुल मुख्य कर्मकार जनसंख्या में वृद्धि हुई है।

सारिणी संख्या 1.2 (अ)

जनपद— गोण्डा

विकासखण्डवार व्यावसायिक संरचना

विकासखण्डवार	सीमान्त कर्मकार		परिवर्तन	अन्य कर्मकार		परिवर्तन
	2007—08	2017—18		2007—08	2017—18	
रूपईडीह	24.84	35.68	86.63	7.49	13.22	96.34
इटियाथोक	23.72	30.30	56.56	10.45	11.63	24.71
पंडरीकृपाल	22.62	39.77	159.96	16.27	21.31	50.78
झंझरी	23.57	40.86	126.76	27.72	32.09	17.21
मुजेहना	22.35	34.03	90.57	10.88	14.38	40.57
कटरा बाजार	16.28	37.07	236.41	3.95	12.73	258.16
हलधरमउ	28.01	44.32	112.54	9.83	19.27	103.70
करनैलगंज	26.58	30.44	56.54	8.14	11.49	82.90
परसपुर	23.78	43.07	103.62	10.01	18.11	51.88
बेलसर	24.50	31.34	64.00	11.29	15.67	61.86
तरबगंज	18.44	35.06	142.06	8.48	13.14	57.12
वजीरगंज	24.59	37.19	98.65	10.92	14.23	42.59
नवाबगंज	31.59	39.68	52.46	9.47	14.32	61.75
मनकापुर	34.68	38.33	29.47	11.28	18.39	80.36
बभनजोत	40.37	41.48	—5.02	7.20	11.80	48.84
छपिया	30.02	44.06	66.58	10.02	15.35	39.10
योग ग्रामीण	26.71	37.71	75.18	10.69	15.92	57.05
योग नगरीय	8.05	22.50	271.47	85.63	76.32	—0.16
योग जनपद	25.75	36.87	78.34	15.47	20.00	36.86

स्रोत— जिला सांख्यिकीय पत्रिका जनपद गोण्डा, वर्ष— 2007—08 एवं 2017—18 एवं डिस्ट्रक्ट सेंसस हैंडबुक जनपद गोण्डा वर्ष — 2001 एवं 2011

सारणी संख्या 1.2 (अ) के अनुसार वर्ष 2001 की व्यवसायिक संरचना से वर्ष 2011 की जनपदजनपद गोण्डा की व्यवसायिक संरचना में सीमानत कर्मकार जनसंख्या में कुल 78.34 प्रतिशत का कालिक परिवर्तन दर्ज किया गया। जनपदजनपद के ग्रामीण क्षेत्र में सीमान्त कर्मकार जनसंख्या में कालिक परिवर्तन 75.18 प्रतिशत तथा नगरीय क्षेत्र में 271.47 प्रतिशत का कालिक परिवर्तन दर्ज किया गया। जनपदजनपद के बभनजोत विकासखण्डविकासखण्ड को छोड़कर अन्य विकासखण्डविकासखण्ड में धनात्मक कालिक परिवर्तन दर्ज किया गया। जनपदजनपद के कटरा बाजार विकासखण्डविकासखण्ड में सबसे अधिक धनात्मक कालिक परिवर्तन 236.41 प्रतिशत तथा सबसे कम

धनात्मक कालिक परिवर्ततन मनकापुर विकासखण्डविकासखण्ड में 29.47 प्रतिशत दर्ज किया गया। अन्य विकासखण्डविकासखण्ड में, इटियाथोक में 56.56 प्रतिशत, पंडरीकृपाल में 159.96 प्रतिशत, झंझरी में 126.76 प्रतिशत, मुजेहना में 90.57 प्रतिशत, पंडरीकृपाल में 159.96 प्रतिशत, झंझरी में 126.76 प्रतिशत, मुजेहना में 90.57 प्रतिशत, हलधरमऊ में 112.54 प्रतिशत, करनैलगंज में 56.54 प्रतिशत, परसपुर में 103.62 प्रतिशत, बेलसर में 64.00 प्रतिशत, तरबगंज में 142.06 प्रतिशत, वजीरगंज में 98.65 प्रतिशत, नवाबगंज में 52.46 प्रतिशत तथा छपिया में 66.58 प्रतिशत दर्ज किया गया। जनपदजनपद के बभनजोतत विकासखण्डविकासखण्ड में 5.02 प्रतिशत का ऋणात्मक काकालिक परिवर्तन दर्ज किया गया।

सारणी संख्या 1.2 (अ) के अनुसार अध्ययन क्षेत्र गोण्डा में अन्य कर्मकार जनसंख्या में कालिक परिवर्तन सम्पूर्ण जनपदजनपद में 36.86 प्रतिशत, ग्रामीण क्षेत्र में 57.05 प्रतिशत तथा नगरीय क्षेत्र में 0.16 प्रतिशत है। जनपदजनपद में अन्य कर्मकार जनसंख्या में वर्ष 2001 की जनगणना में वर्ष 2011 की जनगणना में सबसे अधिक कालिक परिवर्तन झंझरी विकासखण्डविकासखण्ड में 17.21 प्रतिशत है। अन्य विकासखण्डविकासखण्ड में अन्य कर्मकार जनसंख्या में कालिक परिवर्तन रूपईडीह में 96.34 प्रतिशत, इटियाथोक में 24.71 प्रतिशत पंडरीकृपाल में 50.78 प्रतिशत, मुजेहना में 90.57 प्रतिशत, हलधरमऊ में 112.54 प्रतिशत, करनैलगंज में 56.54 प्रतिशत, परसपुर में 103.70 प्रतिशत, करनैलगंज में 82.90 प्रतिशत, परसपुर में 51.88 प्रतिशत, बेलसर में 61.86 प्रतिशत, तरबगंज में 57.12 प्रतिशत, वजीरगंज में 42.59 प्रतिशत, नवाबगंज में 61.75 प्रतिशत, मनकापुर में 80.36 प्रतिशत, बभनजोत में 48.84 प्रतिशत, छपिया में 39.10 प्रतिशत है। अतः स्पष्ट है कि अन्य कर्मकार जनसंख्या में सकारात्मक कालिक परिवर्तन वृद्धि दर्ज की गयी है।

निष्कर्ष

गोंडा जिले में जननांकिकीय लाभांश की अपार संभावनाएँ हैं, क्योंकि यहाँ युवा जनसंख्या का अनुपात अधिक है। लेकिन सामाजिक–आर्थिक बाधाएँ इस संभावित लाभ को सीमित करती हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य की कमी, लैंगिक असमानता, रोजगार के सीमित अवसर, गरीबी और सामाजिक असमानता जननांकिकीय लाभांश को सीमित करते हैं। शिक्षा और कौशल विकास में सुधार, स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार, महिलाओं का सशक्तिकरण एवं औद्योगिक विकास और रोजगार सृजन जननांकिकीय लाभांश को विस्तार देते हैं। इस प्रकार, स्पष्ट है कि जननांकिकीय लाभांश केवल जनसंख्या संरचना पर निर्भर नहीं करता, बल्कि सामाजिक–आर्थिक कारकों से गहराई से प्रभावित होता है। यदि इन कारकों में सुधार किया जाए, तो गोंडा जिला अपने जननांकिकीय लाभांश को आर्थिक विकास में परिवर्तित कर सकता है।

Refrences :-

- Bano, S. (2023). Gender disparity in literacy in Uttar Pradesh: A spatial analysis. Humanities and Social Sciences Communications.
- Bloom, D. E., Canning, D., & Sevilla, J. (2003). The demographic dividend: A new perspective on the economic consequences of population change. RAND Corporation.
- Census of India. (2011). District census handbook: Gonda, Uttar Pradesh. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India.
- Census of India. (2011). Primary census abstract: Gonda district. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India.
- Government of Uttar Pradesh. (2016). District health action plan: Gonda. National Health Mission, Uttar Pradesh.
- IOSR Journal of Business and Management. (n.d.). Demographic challenges and opportunities in Uttar Pradesh.
- Mohanty, S. K., et al. (2016). The demographic and development divide in India: A district-zevel analysis.
- ResearchGate. (2016). Literacy progress in Uttar Pradesh: A district-level analysis.
- United Nations Population Fund (UNFPA). (2014). The power of 1.8 billion: Adolescents, youth and the transformation of the future.
- Veterinaria (REDVET). (2024). Educational infrastructure and regional development in eastern Uttar Pradesh.
- United Nations Population Fund (UNFPA), The Power of 1.8 Billion: Adolescents, Youth and the Transformation of the Future (2014).
- Educational Infrastructure and Regional Development in Eastern Uttar Pradesh, REDVET (2024).